नामांक Roll No.

No. of Questions – **3**
No. of Printed Pages – **7**

SS-34-DL-T.W. (Hindi)

हिन्दी टंकण लिपि (TYPEWRITING HINDI)

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2020

समय : 1 घण्टा

पूर्णांक : 40

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

(1) परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न–पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें ।

(2) प्रत्येक कागज के एक तरफ टंकण करें ।

(3) प्रत्येक प्रश्न को नये पृष्ठ से आरम्भ करना है ।

(4) प्रत्येक लाइन के बीच में द्विगुणित अवकाश (Double Spacing) देकर टंकण करना है ।

(5) प्रत्येक प्रश्न के लिए 2 अंक सजावट के निर्धारित है ।

1. निम्न अवतरण को टंकित कीजिए :

अंक :	18
सजावट :	02
कुल :	**20**

रोगोपचार के अचूक सूत्र

शारीरिक रोगों की पहले भी कमी नहीं थी, पर अब तो वे और भी अधिक तेजी से बढ़ते जा रहे हैं । कारण कि मनुष्य के आहार में कृत्रिम और व्यवहार में अनैतिकता की अभिवृद्धि असाधारण रूप से हुई है । यह बढ़ोतरी ऐसी है, जो शरीर में बेचैनी, उत्तेजना बनकर उभरती है और उनका विस्फोट चित्र–विचित्र रोगों के रूप में फूटकर निकलता है ।

उपचार के लिए यों नई–नई औषधियों का आविष्कार होता जा रहा है । आज जिस औषध को असाधारण बताया जा रहा है और जिसका माहात्म्य दैवी चमत्कारों जैसा कहा जा रहा है, उसी को कुछ दिनों के उपयोग के बाद, प्रचार की गरमी ठंडी होते ही निरर्थक बताया जाने लगता है । इनमें से कई को तो हानिकारक भी बताया जाता है और उनके प्रयोग पर प्रतिबंध लगा दिया जाता है ।

आकृति बदलती रहती है, पर प्रकृति नहीं बदलती है । इन औषधियों के नित नए आविष्कार होते रहते हैं । साथ ही ऐसे रोगों का उद्‌भव भी होता रहता है, जिनका पहले नाम भी नहीं सुना गया था, जिनके लक्षण एवं निदान का कहीं, किन्हीं पुरातन पुस्तकों में उल्लेख तक नहीं मिलता ।

जड़ की सिंचाई होते रहने पर वह हरी बनी रहेगी और टहनी–पत्ते तोड़ते रहने पर भी नए–नए पल्लव फूटते रहेंगे । रुग्णता की जड़ आहार की कृत्रिमता और मन पर छाई हुई उच्छृंखलता, इन दोनों के सम्मिश्रण से शरीर और मन दोनों को आधि–व्याधियाँ घेरती हैं ।

औषध–उपचार से निराकरण तब तक नहीं हो सकता, जब तक कि उसकी जड़ हरी–भरी है । एक पत्ता तोड़ने पर उसके स्थान पर नई कोपलें उग आती हैं । एक नामरूप वाली बीमारी का तीव्र मारक औषधियों के प्रभाव से उफान कम होता है, किंतु उसके स्थान पर नया उद्भव उफन पड़ता है ।

फसल के रोगों को नियंत्रण करने के लिए कीटनाशक रसायन छिड़कने का सिलसिला चलता है । आरंभ में उनका कुछ प्रभाव दिखाई देता है । किन्तु कुछ ही दिन बाद वे रोग–कीट उन दवाओं के अभ्यस्त हो जाते हैं ।

नशेबाज हलके–भारी विषों का ही सेवन करते हैं । आरम्भ उनकी हानियाँ, उत्तेजना ही दिखाई देती हैं, किन्तु कुछ ही समय बाद नशेबाज उन द्रव्यों का और भी अधिक सेवन करने लगता है । इतना ही नहीं, उनका आदी भी हो जाता है । इस प्रकार अभ्यस्त हो जाता है कि उन्हें लिए बिना काम ही नहीं चलता ।

मलेरिया के मच्छर मारने के लिए आरंभ में डी.डी.टी. का प्रयोग किसी हद तक सफल भी हुआ था, पर अब नई पीढ़ी के मच्छर उससे मरना तो दूर, उसका सेवन करने के लिए आकुल–व्याकुल फिरते हैं । उन पर मानक प्रभाव काम नहीं करता ।

फसल पर रोग–कीटनाशक छिड़कने का भी यही परिणाम होता है । वे दवाएँ कुछ ही समय बाद गुणहीन सिद्ध होने लगती हैं और उनके स्थान पर नई और अधिक तीक्ष्ण औषधियाँ बनानी पड़ती हैं, पर उनका प्रभाव भी चिरस्थायी नहीं रहता ।

ठीक इसी प्रकार मनुष्यों के शरीर में उत्पन्न होने वाले रोगों के निमित जो औषधियाँ खोजी जाती हैं, उनमें से अधिकांश मारक एवं ज्ञान-तंतुओं को सुन्न करने वाली होती हैं । मारक औषधियाँ कुछ ही दिनों में अधिक मात्रा की माँग करने लगती हैं और अंत में वे भी निरर्थक बन जाती हैं । रोगी इन भूल-भुलैयों में भटकता हुआ क्रमश:

1. अधिक बड़ी जटिलता में फसता जाता है ।

2. अस्पताल, चिकित्सक बढ़ते जाते हैं, साथ ही रोगों के प्रकार एवं संकट भी ।

स्थायी उपायों की दृष्टि से हमें सात्विक और सीमित भोजन की मात्रा के संबंध में ध्यान देना चाहिए । मसाले और नशे पेट में जाने से पूर्व रोके जाने चाहिए । चिकनाई, मिठाई की मात्रा बढ़ने से आहार ऐसा बन जाता है, जो पोषण के प्रयोजन से दूर हटकर शोषण करने लगता है । माँस मनुष्य की प्रकृति के सर्वथा विपरीत होने के कारण उसे निरोग नहीं रख सकता, उत्तेजना देकर ऐसी बलिष्ठता भले ही प्रदान कर दे, जो अधिक समय न ठहर सके और भीतर-ही-भीतर आरोग्य की जड़ें खोखली करती रहे ।

कभी शरीर का सन्तुलन मात्र आहार पर निर्भर समझा जाता था, अब नए अनुसंधानों ने समूची दिशा धारा ही बदल दी है ।

2. निम्न पत्र को टंकित कीजिए :

अंक :	08
सजावट :	02
कुल :	**10**

सुखीराम एण्ट सन्स

(कपड़े के थोक व्यापारी)

टेलीफोन : 19585560 — 75 हंस नगर

जी.एस.टी. नं 757 — रावत रोड़

ईमेल : खुशी @58 — सज्जनगढ़

फैक्स : 81454545 — (उ.प्र.)

पत्रांक : 333/2019 — दिनांक : 22-10-2019

सर्व श्री

———————————————

———————————————

———————————————

विषय : दुकान का पता परिवर्तन बाबत ।

आपको यह सूचित करते हुए हमें प्रसन्नता हो रही है कि हमें पिछले 10–15 वर्षों से आपकी ओर से निरन्तर सेवा का अवसर प्रदान किया गया है ।

आपकी माँग के अनुसार हमने आपको सदैव आदेशानुसार गुणवत्तापूर्ण माल सुपुर्दगी का प्रयास किया है, किन्तु अब ग्राहकों की माँग में दस प्रतिशत की अतिरिक्त माँग बढ़ने के कारण दुकान में माल रखने एवं ग्राहकों को आसानी से दुकान तक पहुँचने में कठिनाई का अनुभव हो रहा है ।

इस समस्या को देखते हुए हमने निर्णय लिया है कि अब हमारी दुकान का नया पता दिनांक 01-01-2020 से निम्न रहेगा :

खुशीराम एण्ड सन्स

(कपड़े के थोक व्यापारी)

175 नन्दबाग

हस्तीनापुर मार्ग

हंससागर

(उ.प्र.)

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हमने नये पते के साथ ही व्यापारिक शर्तों में कुछ परिवर्तन किया है । सभी ग्राहकों को 1 से 4 प्रतिशत तक की छूट प्रिन्टेड मूल्य में देने का निर्णय लिया है । साथ ही सभी प्रकार के क्रयादेश में एफ ओ आर की शर्त लागू रहेगी ।

शेष शर्तें पूर्ववत ही रहेगी

भवदीय,

दुखीराम

साझेदार

3. निम्न सारणी को यथोचित रूप देकर टंकित कीजिए :

अंक :	08
सजावट :	02
कुल :	**10**

हरियाणा स्टेट रोड़ ट्रान्सपोर्ट कार्पोरेशन
समय सारणी
(काल्पनिक)
(द्रुतगामी बस सेवा)

क्रम संख्या	मार्ग का नाम		सुबह	शाम
	कहाँ से	कहाँ को		
1	चण्डीगढ़	हिसार	7.15	9.30
2	चण्डीगढ़	नारनौल	9.30	10.15
3	चण्डीगढ़	जयपुर	6.30	11.00
4	चण्डीगढ़	दिल्ली	7.00	8.30
5	चण्डीगढ़	लखनऊ	6.30	9.00
6	चण्डीगढ़	कानपुर	5.00	7.00
7	चण्डीगढ़	जोधपुर	8.15	8.30
8	चण्डीगढ़	बीकानेर	8.30	8.30
9	चण्डीगढ़	उदयपुर	6.30	8.00
10	चण्डीगढ़	हरिद्वार	7.30	7.30
11	चण्डीगढ़	मथुरा	6.00	8.00
12	चण्डीगढ़	आगरा	6.30	8.45